कृति

लघु जिनपूजा

आशीर्वाद

जैनाचार्य परम पूज्य श्री विद्यासागर जी महाराज

रचयिता

मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज

संस्करण

सप्तम

मूल्य

प्रतिदिन पूजन

पुण्यार्जक

विद्या सुव्रत संघ

मेरी श्रद्धा

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है। वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

आगम के आधार पर पूर्वकृत पूजन विधि को ध्यान में रखकर प्रस्तुति कृति 'लघु जिनपूजा' की रचना परम पूज्य मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज ने करके महान् उपकार किया गया है।

यह कृति उन श्रावकों के लिए है, जो पूजा करना तो चाहते हैं लेकिन समयाभाव के कारण नहीं कर पाते। यह कृति श्रावक के षट् कर्तव्य में प्रथम कर्तव्य को पूर्ण करने में सहयोगी बनेगी।

प्रकाशक

विनय-सुपाठ

मन वच तन पावन बना, आया मैं प्रभु - द्वार।
जिन-सूरज जिन-चन्द्र को, वन्दन बारम्बार॥ 1॥

कर्मों के हर्त्ता तुम्हीं, मुक्ति रमा के नाथ।
वीर! तीर संसार के, तुम्हीं त्रिलोकी नाथ॥ 2॥

आतम वैभव के धनी, तुम धर्मी गुणवान।
स्वर्ग मोक्ष दाता तुम्हीं, तुम्हीं पूज्य भगवान्॥ 3॥

भक्तों को तुम तारते, तारण-तरण जहाज।
मुझको भी तारो तुम्हीं, कृपा सिंधु जिनराज॥ 4॥

नाथ! आपका नाम भी, कष्ट विघ्न हर्त्तार।
मुझ पर करुणा करो, कर दो अब उद्धार॥ 5॥

जन्मादिक व्याधीं हरो, मैं आया हूँ पास।
कर्म बंध से मुक्ति दो, देकर कुछ संन्यास॥ 6॥

तुमरा वैभव देखकर, दास हुआ संसार।
मैं तो बस विनती करूँ, महिमा अपरम्पार॥ 7॥

जल बिन ज्यों मछली हुयी, चाँद बिना ज्यों रात।
वैसे तुम बिन मैं हुआ, बालक ज्यों बिन मात॥ 8॥

नमूँ-नमूँ ओंकार को, वन्दूँ जिन चौबीस।
देवशास्त्रगुरु को नमूँ, हो मंगल आशीष॥ 9॥

परमेष्ठी पाँचों नमूँ, नमूँ-नमूँ नवदेव।
भूत भविष्यत् आज के, वन्दूँ प्रभु जिनदेव॥ 10॥

मंगल-मंगल बोल हों, मंगल-मंगल ध्यान।
मंगलमय 'सुव्रत' रहें, हो सबका कल्याण॥ 11॥

(पुष्पाञ्जलिं ....)

(9 बार णमोकार मंत्र)

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय ! नमोऽस्तु ! नमोऽस्तु ! नमोऽस्तु!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः (पुष्पाञ्जलिं ....)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं ....)

(लय : मेरीभावनावत्)

पहला मंगल अपराजित यह, सभी विघ्न हरने वाला।
णमोकार यह मंत्र सदा ही, पाप नाश करने वाला॥
सुस्थित दुस्थित सभी दशा में, णमोकार जो ध्याते हैं।
पाप नशा भीतर बाहर से, पावन बन सुख पाते हैं॥

(दोहा)

अर्हम् सिद्ध समूह जो, सगुण मुक्ति के धाम।
कर्म रहित परमेश को, शत-शत नम्र प्रणाम॥
श्री जिनवर की वन्दना, हरती विघ्न समूल।
भूत शाकिनी सर्प भय, हरे जहर का शूल॥

(पुष्पाञ्जलिं ......)

पाँचों कल्याणक नमूँ, जिनवाणी जिननाम।
अर्घ चढ़ा परमेश को, सादर करूँ प्रणाम॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक-पंचपरमेष्ठी-जिनसहस्रनाम-जिनसूत्रेभ्यो
अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञापाठ

तीनलोक के स्वामी गुरुवर, नन्त चतुष्टय के धारी।
ज्ञान-सूर्य सर्वज्ञ हितैषी, समवसरण वैभवधारी॥
श्री अर्हन् की पूजा करने, द्रव्य शुद्ध कर मैं लाया।
ज्ञान हवन में पुण्य होम कर, भाव शुद्ध करने आया॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं ......।

स्वस्ति मंगलपाठ

वृषभअजित शम्भव अभिनंदन,सुमति पद्म सुपार्श्व जिनचंद्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांसजिन, वासुपूज्य प्रभु विमल अनंत॥
धर्म शांति कुंथू अर मल्ली, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान्।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों हों, मंगलमय मंगल भगवान्॥

(पुष्पांजलिं....)

परमर्षि स्वस्ति मंगलपाठ

चौंसठ-चौंसठ ऋद्धियाँ, परमर्षि-ऋषिराज।
मंगल हम सबका करें, करें हृदय पर राज॥

(इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानं पुष्पाञ्जलिं ....)

नवदेवता-देवशास्त्रगुरु पूजा

(लय : मेरीभावनावत्)

श्री अरहन्त सिद्ध आचारज, उपाध्याय सब साधु महान्।
जय जिनधर्म जिनागम जय जिन-चैत्य तथा चैत्यालय धाम॥
ये नवदेवा देव शास्त्र गुरु, पूजित जग में जिन भगवान्।
मन मंदिर में इन्हें बिठाकर, हम करते हैं पूजन ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता देवशास्त्र गुरु समूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं। (पुष्पाञ्जलिं ......)

जल तज के रत्नत्रय जल से, अब कर दो पावन हमको।
तुम बिन सक्षम कौन यहाँ पर ? नीर करें अर्पण तुमको॥
देवशास्त्र गुरु नव देवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या? नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत् कूप में आग लगी है, उसमें जलते सब प्राणी।
तन मन भव का ताप मिटाती, जिनवर वाणी कल्याणी॥

देवशास्त्र गुरु नव देवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या? नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता देवशास्त्रगुरुभ्यः संसारताप विनाशनाय
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग वैभव की मारामारी, तजने तन्दुल चढ़ा रहे।
भक्ति-नाव से मुक्ति-गाँव को, पाने माथा झुका रहे॥
देवशास्त्र गुरु नव देवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या? नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जिन-सूरज के नाम मात्र से, भाग्यकमल खिलकर महके।
काम रोग की व्यथा मिटे तो, ब्रह्मचर्य बगिया महके॥
देवशास्त्र गुरु नव देवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या? नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाण विध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा साँप है महाभयंकर, आप गरुड़ बन आ जाओ।
ये नैवेद्य आपको अर्पण, क्षुधा जहर प्रभु नशवाओ॥

देवशास्त्र गुरु नव देवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या? नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता देवशास्त्रगुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथा रात में सूरज गाफिल, तथा मोह में हम अंधे।
ज्ञान किरण दो हमको भगवन्, करें आरती हम बन्दे॥
देवशास्त्र गुरु नव देवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या? नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके दिल में प्रभु तुम वसते, उसके विधि बंधन टूटें।
हृदय हमारे आओ भगवन्!, धूप चढ़ाकर हम पूजें॥
देवशास्त्र गुरु नव देवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या? नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वही सही फल जो उग करके, फसल बढ़ाये घर भर दे।
अगर वही फल प्रभु चरणों में, अर्पण हो तो शिवपुर दे॥

देवशास्त्र गुरु नव देवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या? नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता देवशास्त्रगुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का मिश्रण करके, भाव भक्ति से चढ़ा रहे।
अक्षय अंक मिले रत्नत्रय, यही भावना बना रहे॥
देवशास्त्र गुरु नव देवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या? नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

नवदेवों के साथ में, देव शास्त्र गुरु जाप।
भक्तों के संकट हरे, सुख दे अपने आप॥

(लय : मेरी भावनावत्)

अर्हत् भगवत् घाति कर्म बिन, भव्य जनों को तार रहे।
अष्ट कर्म बिन सिद्ध महन्ता, आतम के शृंगार रहे॥

शिक्षा दीक्षा दण्ड प्रदाता, गुरु आचार्य ज्ञान पथ दें।
शास्त्र पठन करते करवाते, उपाध्याय विद्यारथ दें॥ 1॥

ज्ञान ध्यान तप में रत रहके, साधु थामते धर्म ध्वजा।
पूज्य पंच परमेष्ठी ये हैं, मिले इन्हीं की शरण मजा॥
जैनधर्म का चक्र निरन्तर, चलता हरता कर्म कथा।
अर्हत्‌वाणी जिन आगम का, अमृत पीकर हरो व्यथा॥ 2॥

प्रभु मूरत जिन चैत्य मनोहर, मन को शांति दिलाते हैं।
जिन मंदिर जिन चैत्यालय जो, चित्त भ्रांति नशवाते हैं॥
पूज्य यही नवदेव पूज लो, दसवें की क्यों हो पूजा।
दसवें की जो करते पूजा, उनसा मूर्ख नहीं दूजा॥ 3॥

दोष अठारह रहित देव हैं, देवों के जो देव रहे।
हित से सहित शास्त्र हितकर हैं, ग्रन्थ रहित गुरु देव रहे॥
परिषह उपसर्गों में जिनका, मन मेरु सा अचल रहा।
देवशास्त्र गुरु तीन रतन की, पूजन को मन मचल रहा॥4॥

जिन नव देवा, देव शास्त्र गुरु, ये आदर्श हमारे हैं।
इनके पूजक भक्तजनों के, रात दिवस त्यौहारे हैं॥
हरके संकट भरें संपदा, विघ्न कष्ट उलझन हर दें।
इस गंगा में नहा-नहा के, 'सुव्रत' मन पावन कर लें॥ 5॥

भाव भक्ति से गा लिये, नव देवों के गीत।
देव शास्त्र गुरु नाम में, घटे न अपनी प्रीत॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता देवशास्त्रगुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति शांतिधारा करे, करें शांति चहुँ ओर।
पुष्पांजलि से हो रहे, भक्त कमल के भोर॥

(शांतिधारा.......पुष्पाञ्जलिं .....)

महा-अर्घ्य (मेरी भावनावत्)

जिन मूरत पाँचों परमेष्ठी, देवशास्त्र गुरु को पूजूँ।
नामादिक नव-देव पूज लूँ, तीर्थंकर तीरथ पूजूँ॥
दया धर्म दशलक्षण पूजूँ, रत्नत्रय मन से पूजूँ।
पूज्य भावनाओं को सादर, महाअर्घ्य लेकर पूजूँ॥

ॐ ह्रीं क्लीं ऐं महाऽर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(चौपाई)

शांतिप्रभु चन्दा के जैसे, गुण-धर नेत्र, कमल के जैसे।
पंचम चक्री सोलम जिनवर, आठों प्रातिहार्य मय मनहर॥
शांतिनाथ प्रभु शांति प्रदाता, जगत् पूज्य को हम नत माथा।
हमें शांति दो, जगत् शांति हो, हम पूजें नित शांति शांति को॥

(दोहा)

पूजक रक्षक राज्य को, राजा देश विदेश।
गुरु मुनियों को शांति दें, परम शांति परमेश॥

शांतिधारा (मेरी भावनावत्)

सभी प्रजा सम्पन्न सुखी हो, राजा धर्मी सक्षम हो।
योग्य समय पर सम्यक् विधि से, बादल बरसें रिमझिम हो॥
चोरी-मारी रोग व्याधियाँ, जग से सब दुर्भिक्ष टलें।
सुख दाता जिनधर्म चक्र हो, यही भाव दिन रात फलें॥

(दोहा)

घातिकर्म हर पा लिये, उज्ज्वल केवलज्ञान।
जगत् शांति सुखमय करो, वृषभादिक भगवान्॥

अंतिम इष्ट प्रार्थना

चन्दनधारा

नमूँ चार अनुयोग पढूँ मैं, प्रभु वन्दन सत्संग करूँ।
गुण गाऊँ पर दोष न बोलूँ, सबसे हित मित बात करूँ॥
तव चरणों में मम हिय थित हो, मेरे हिय में तव चरणा।
जब तक मैं निर्वाण न पाऊँ, यही भावना ये रटना॥
क्षमा करो मम दुख हरो, रत्नत्रय दो नाँव।
वीर मरण मैं कर सकूँ, दो चरणों की छाँव॥

(पुष्पाञ्जलिं ...... नौ बार णमोकार मंत्र)

विसर्जन पाठ

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिए, चरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजा विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु।
यः यः यः॥ (नौ बार णमोकार मंत्र)